Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B.A - Part I Paper - II
Metaphysics and Epistemology

1

Notes

"Dualism"
(द्वैतवाद)

द्वैतवाद वह तत्वशास्त्रीय सिद्धान्त है जो मूलतत्व के स्वरूप में द्वैत को स्वीकार करता है। इनके अनुसार मूलतत्व को किसी एक प्रकार का मानना अनुचित है क्योंकि उसकी प्रकृति में मौलिक द्वैत है। यह मूलतत्व की गुणात्मक एकता को अस्वीकार करता है और द्वैत को सत्य मानता है।

भौतिकवाद, प्रत्ययवाद और अनुभववाद इन तीनों तत्वशास्त्रीय सिद्धान्त के साथ द्वैतवाद का विरोध है, क्योंकि ये तीनों सिद्धान्त मूलतत्व के स्वरूप को एक मानते हैं। भौतिकवाद के लिए मूलतत्व सिर्फ भौतिक, प्रत्ययवाद के लिए सिर्फ आध्यात्मिक, अनुभववाद के लिए सिर्फ अनुभव है। पर द्वैतवाद मूलतत्व के स्वरूप में द्वैत मानता है। इसके अनुसार मूल तत्व की प्रकृति में दो भिन्न धर्म या भिन्न प्रकार के तत्व हैं जो ऐसे हैं कि एक का दूसरे में अन्तर्भाव असम्भव है। अतः द्वैत शाश्वत है। विश्व के पदार्थों में जितनी भिन्नताएँ या विरोध हैं वे सभी आध्यारिक द्वैत के कारण हैं। द्वैत का आधार होता है कोरा अनुभव।

व्यापक दृष्टि से द्वैतवाद के दो भेद किये जाते हैं —

1. अदार्शनिक द्वैतवाद
2. दार्शनिक द्वैतवाद

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

Kinds of dualism

(1) unphilosophical dualism or Popular dualism or naive dualism or Common-sense dualism

(2) Philosophical dualism.

1. अदार्शनिक द्वैतवाद :—

वह सिद्धान्त है जिसे साधारण जनता बिना बौद्धिक छान-बीन किये ही स्वीकार कर लेती है। इसका मंडन तर्क और बौद्धिक चिन्तन का परिणाम नहीं होता। दैनिक जीवन के अनुभव पर सर्वसाधारण व्यक्ति सुख-दुःख, निर्जीव-सजीव, जीवन-मृत्यु दोनों को 'real' मान लेता है।

2. दार्शनिक द्वैतवाद—

तर्क और युक्ति के आधार पर स्थापित द्वैतवाद है। यह सिद्धान्त विश्व के मूल में द्वैत को मानता है किन्तु अपने निष्कर्ष की स्थापना के लिए वह बौद्धिक चिन्तन का सहारा लेता है। मूल सत्ता का वास्तविक स्वरूप क्या है, उसके अन्दर स्थित द्वैत किस प्रकार का है तथा विश्व की सृष्टि क्यों और कैसे होती है, इन सभी प्रश्नों का हल करने का प्रयास दार्शनिक द्वैतवाद करता है। अदार्शनिक द्वैतवाद और दार्शनिक द्वैतवाद में अन्तर सिर्फ Method को लेकर है। एक दैनिक जीवन का अनुभव है और दूसरा बौद्धिक विश्लेषण

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes

का अनुमान है।

दार्शनिक द्वैतवाद को लेकर एक प्रश्न उठता है कि अगर मूलतत्व के स्वरूप में द्वैत है तो उनकी संख्या क्या है? इस प्रश्न का उत्तर तीन रूप में दिया जाता है। कुछ दार्शनिकों ने कहा है कि —

1. मूल तत्व के स्वरूप में द्वैत है किन्तु उनकी संख्या एक है। (Duality in nature but unity in number)

2. मूलतत्व के स्वरूप में भी द्वैत है और उनकी संख्या में भी द्वैत है। (Duality both in nature and number.)

3. मूलतत्व के स्वरूप में द्वैत और उनकी संख्या में अनेकता है। (Duality in nature but plurality in number)

दार्शनिक द्वैतवाद के मुख्य रूप से यही तीनों प्रभेद हैं।

1. Duality in nature but unity in number

पाश्चात्य दर्शन में इसका स्पष्ट उदाहरण नहीं मिलता है। भारतीय दार्शनिक रामानुज के दर्शन में इसका बड़ा ही स्पष्ट उदाहरण देखने को मिलता है। इनके अनुसार विश्व का मूलाधार ईश्वर और प्रकृति है। जिनकी संख्या

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

एक है किन्तु प्राकृतिक द्वैत है। रामानुज सगुण में विश्वास करते हैं। निर्गुण को वे नहीं मानते हैं। इन्होंने ब्रह्म के रूप में दो तत्वों को स्वीकार किया है— चित व अचित।

चेतन पदार्थों का निर्माण चित से होता है। अचित पदार्थों का से अचेतन का निर्माण होता है। चित और अचित दोनों एक दूसरे के विरोधी हैं। रामानुज के अनुसार ब्रह्म सजातीय और विजातीय भेद से रहित है लेकिन यह स्वगत भेद से रहित नहीं है। अतः रामानुज संख्यात्मक एकवाद तथा गुणात्मक द्वैतवाद का प्रतिपादन करते हैं। इनका दर्शन विशिष्ट द्वैत कहलाता है, क्योंकि वे ब्रह्म को चित और अचित से युक्त मानते हैं।

2. Duality both in nature and number — भारतीय दर्शन में इसका स्पष्ट उदाहरण नहीं मिलता है। पाश्चात्य दर्शन में इसका स्पष्ट उदाहरण प्लेटो और अरस्तू के दर्शन में मिलता है। प्लेटो दो परमार्थ तत्व को मानता है— 1. Idea of good. 2. Matter. इनका कहना है कि सामान्य प्रत्ययों की संख्या अनन्त है और सत्य है किन्तु सबको स्वतंत्र सत्ता प्राप्त नहीं है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes

शुभतः स्वतन्त्र सत्ता क्योंकि शुभ प्रत्यय की है जो सर्वोत्कृष्ट सर्वव्यापक तथा अन्य प्रत्ययों का आधार है।

"The supreme Idea, he tells us, is the God. This, as being the ultimate reality, is that ground of all other Ideas."

शुभ प्रत्यय के अतिरिक्त एक और पदार्थ परमार्थ है और वह है भूत। भूत निर्गुण एवं formless है। इसी भूत पर विभिन्न प्रत्ययों की छाप पड़ने से विश्व के विभिन्न पदार्थों की उत्पत्ति होती है। Aristotle किसी भी कार्य की उत्पत्ति के लिए चार कारण को मानते हैं—

~~निमित्तकारण~~

1. उपादान कारण (Material cause.)
2. निमित्तकारण (Efficiant cause.)
3. स्वरूप कारण (Formal cause.)
4. प्रयोजन कारण (Final cause)

बाद में Aristotle तीनों कारण को final cause में रूपान्तर कर देते हैं।

1. Form.
2. Matter.
3. Duality in nature but plurality in

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

number — इसके स्पष्ट समर्थक प्राचीन यूनानी दार्शनिक Anaxagoras तथा भारतीय दर्शन में कपिल है। कपिल द्वारा स्थापित दार्शनिक सम्प्रदाय सांख्य दर्शन कहलाता है। द्वैतवाद का यह मूलक सत्ता में गुणात्मक द्वैत और संख्यात्मक अनेकता स्वीकार करता है।

एनेक्जागोरस मानते है कि जड़ और चितशक्ति परस्पर विभिन्न प्रकृतिवाले पदार्थ मूलतत्व है। इनमें जड की संख्या अनेक है तथा चितशक्ति एक। एक चितशक्ति और अनेक जड़ मिलकर मूलतत्व की संख्या अनेक हो जाती है। किन्तु इनकी प्रकृति द्वैतपूर्ण है क्योंकि चितशक्ति चेतन है और जड़तत्व भौतिक है। सृष्टि के प्रारम्भ में जितने भी भौतिक पदार्थ है वे सभी एक साथ मिले रहते है।

भारतीय दर्शन में सांख्य दर्शन ने मूलतत्व के स्वरूप को द्वैत और संख्या को अनेक माना है। महर्षि कपिल इसके प्रवर्तक है ये मूलतत्व के रूप में पुरुष और प्रकृति को स्वीकार करते है। इन दोनों के मिलने से ही सृष्टि का निर्माण होता है। अन्ततः सभी द्वैतवादियों ने स्वीकार किया है कि जड़ और चेतन के बीच द्वैत है। चूँकि द्वैतवादी जड़ और चेतन को परस्पर विरोधी

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes

पदार्थ को पुरुषार्थ मानते हैं। अतः इसे सिद्ध करने के लिए अनेक तर्कों का सहारा लिया है।

1. द्वैतवाद का सबसे सबल प्रमाण अनुभव है। जड़ और चेतन दो तरह के परस्पर विरोधी पदार्थों का अनुभव हमें सदा होता है इसलिए विश्व के मूल में जड़ और चेतन का आधारिक द्वैत स्वीकार किया जा सकता है अन्यथा अनुभूत द्वैत की व्याख्या नहीं दी सकती है।

2. द्वैतवाद जड़ और चेतन को परस्पर विरोधी मानता है इसलिए दोनों को परमार्थ मानना आवश्यक है क्योंकि विरोधी दोनों के कारण किसी एक को ही परमार्थ मानकर दूसरे की व्याख्या नहीं दी सकती। दोनों को परमार्थ मानकर ही विश्व की संगत व्याख्या हम कर सकते हैं।

3. सांख्य दर्शन के अनुसार चेतन और अचेतन पदार्थों की अनुभूति सर्वजनित है। अपने अन्दर आत्मा के रूप में चेतन सत्ता का अनुभव सबको होता है। अतः चेतन तत्त्व या प्रत्यय का अस्तित्व है किन्तु सभी अनुभूत भौतिक पदार्थ सीमित तथा किसी-न-किसी पदार्थ के कार्य या परिणाम हैं इसलिए इनका कोई अनादि और अनन्त

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

GRB BOOKS

कारण मानना आवश्यक है। यही प्रकृति है। इसीलिए अन्त में पुरुष और प्रकृति अर्थात् चेतन और जड़ परमार्थ सिद्ध होते हैं।

4. कुछ विचारकों का कहना है कि जितने भी प्राकृतिक विज्ञान हैं जैसे — Physics, Chemistry, Biology, Psychology आदि सभी जड़ एवं चेतन के बीच द्वैत को स्वीकार करके इसी आधार पर प्रयोग करते हैं और इन विज्ञानों के प्रयोग सूत्र होते हैं इसलिए जड़ एवं चेतन को परमार्थ मानना ही होगा।

द्वैतवाद के विरुद्ध अनेक आलोचनाएँ की गयी हैं —

1. द्वैतवाद अपने विचार को अनुभव पर आधारित करता है लेकिन अनुभवात्मक ज्ञान हमेशा सत्य नहीं होता है। हमें अनुभव कुछ होता है और वास्तविकता कुछ और होती है। जैसे — हमें अनुभव होता है कि सूर्य गतिशील और पृथ्वी स्थिर है पर यह अनुभव गलत है क्योंकि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी गतिशील है। इसलिए अनुभूत द्वैत के आधार पर वास्तविक द्वैत का अनुभव करना ठीक नहीं है।

2. द्वैतवाद का कहना है कि परस्पर विरोधी तत्वों के सहयोग से विश्व का निर्माण होता है। किन्तु यहाँ प्रश्न उठता है कि यदि मूल तत्व परस्पर

सुगम पास-बुक AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes

विरोधी है तो इनमें सहयोग कैसे सम्भव होगा ? ऐसी हालत में विश्व की उत्पत्ति कैसे होगी ? इसका उत्तर किसी भी द्वैतवादियों के पास नहीं है।

3. सांख्य का कहना है कि पुरुष और प्रकृति के सहयोग से विश्व का विकास होता है। किन्तु यहाँ पर प्रश्न उठता है कि दोनों विरोधी हैं तो उनमें सहयोग कैसे सम्भव है? इसके उत्तर के लिए सांख्य अंधे और लंगड़े का उदाहरण देता है। इस उदाहरण में अंधा प्रकृति का प्रतीक है क्योंकि प्रकृति अंधी है अर्थात अचेतन है और लंगड़ा पुरुष का क्योंकि पुरुष निष्क्रिय है। लेकिन यह सही व्याख्या नहीं है। अंधा और लंगड़ा परस्पर विरोधी नहीं है क्योंकि दोनों चेतन हैं और दोनों का उद्देश्य एक है इसलिए उनका सहयोग आवश्यक है किन्तु प्रकृति और पुरुष का नहीं।

4. द्वैतवाद के विरुद्ध में सेलर्स का कहना है कि आधुनिक विकासवाद ने प्रमाणित कर दिया है कि चेतन कोई आदिम सत्ता नहीं है बल्कि विकास क्रम में उत्पन्न हुआ है। जीवन के विकास के पश्चात कुछ ऐसी

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

GRB BOOKS

Notes

स्मृति पैदा हुई कि चेतन का विकास हुआ। अतः जब चेतन की सत्ता मौलिक नहीं है तो इस हालत में द्वैतवाद का यह कहना कि चेतन और जड़ दोनों समानतः मौलिक और परमार्थ है, न्यायपूर्ण नहीं है।

5. ज्ञान मीमांसा ने भी द्वैतवाद पर आक्षेप लगाया है। चेतन को जड़ से नितान्त भिन्न मानने पर ज्ञान असम्भव हो जाता है। यह मानी हुई बात है कि जड़ पदार्थों का ज्ञान हमें होता है। ज्ञान में ज्ञाता और ज्ञेय के बीच सम्बन्ध स्थापित होता है किन्तु यहाँ पर ज्ञाता चेतन और ज्ञेय जड़ और भौतिक है। अब चूंकि द्वैतवाद चेतन और जड़ को परस्पर विरोधी और स्वतन्त्र मानता है इसलिए दोनों का सम्बन्ध सम्भव नहीं है। किन्तु सम्बन्ध के अभाव में चेतन द्वारा जड़ का ज्ञान असम्भव हो जायगा। इसलिए द्वैतवाद को मानने से ज्ञान असम्भव हो जाता है किन्तु ज्ञान होता है। यह एक वास्तविक घटना है। इसलिए द्वैतवाद को सत्य नहीं माना जा सकता।

उपर्युक्त आलोचना के आधार पर यह सिद्ध होता है कि द्वैतवाद दुर्बल सिद्धान्त है। इसकी दुर्बलता दार्शनिकों ने महसूस की है। और इसके समर्थकों की संख्या बहुत कम है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM